REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2024

आज के संदर्भ में रहीम के नीतिकाव्य की प्रासंगिकता

प्रा. डॉ. वडजे राजेंद्र कैलास
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
ए. आर. बुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय, सोलापुर महाराष्ट्र .

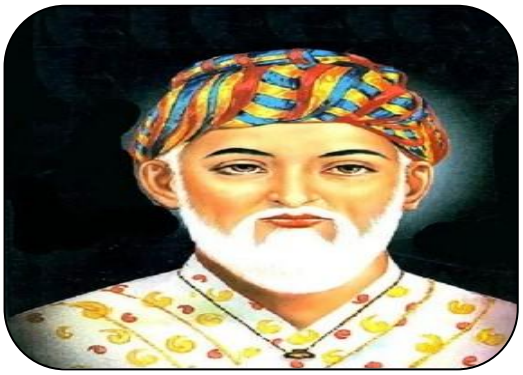

भक्तिकाल और रीतिकाल के संधिकाल में अब्दुर्रहमान खानखाना 'रहीम' सामाजिक मूल्यों की दृष्टी से एक प्रतिनिधि एवं महत्वपूर्ण कवि रहे है। उनका जन्म सन १५५३ ई. में हुआ । अकबर बादशाह के प्रसिद्ध अभिभावक मोगल सरदार बैरम खाँ खानखाना के वे पुत्र थे। संवेदनशील एवं कवि हृदय व्यक्तित्व वाले रहीम अपने पिता के कारण युद्ध कला में भी निपुण थे। रहीम हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अरबी और फ़ारसी के ज्ञाता थे। उदार हृदय वाले इस कवि को लोग 'दानी कर्ण' की उपाधि से उल्लेखित करते है। लोकप्रशंसा एवं दिखावेपण के लिए अपनी दानता का निर्वहन न करके कवि रहीम के स्वभाव का ही एक अभिन्न हिस्सा उनकी उदारता थी।

अकबर के शासनकाल में प्रधान सेनापति के पद पर आसीन कवि रहीम अपनी योग्यता के बल पर अकबर बादशाह के दरबार में मंत्री के पद पर भी नियुक्त किये गए थे। कवि रहीम की वीरता के कारण बादशाह अकबर ने रहीम को कई युद्ध मुहिमों पर भेजा था। संवेदनशील हृदय वाले कवि रहीम युद्धों के दौरान निर्ममता से जानेवाली जानें एवं हत्याओं से विचलित होने लगे थे। इसी कारण से वे धीरे- धीरे युद्ध से परहेज करने लगे थे। ऐसा कहा जाता है कि गलतफैमी से धोखाधड़ी के आरोप में कवि रहीम कि सारी संपत्ति बादशाह जहाँगीर ने जब्त कर ली थी। अपने पुरे जीवन काल में लाखों रुपयें दान में देने वाला यह कवि जिंदगी की विवशता में आर्थिक विपन्नावस्था से भी जुझा था। अपनी दीन दशा को अपनी रचना में यूँ बयां किया है-

"तबाही लौं जीबो भलो देबौं होय न धीमा।
जग में रहिबो कुँचित गति उचित न होय रहीम।।" १

अर्थात - सुख के सब साथी होते है किन्तु दुःख में अपने साथ कोई नहीं होता। निर्धनता की स्थिति में लोग पहचानते तक नहीं है। रीतिकाल के श्रृंगारिक माहौल से विचलित न होकर कवि रहीम ने सामाजिक मूल्यों को अपने काव्य के केंद्रीय स्वर के रूप में स्थापित किया है। समाज की स्थिति एवं गति से प्रभावित कवि रहीम ने विभिन्न प्रकार के उपदेश अपने दोहों, मुक्तकों और बरवों

में दिए है। उनके द्वारा दिए यह उपदेश २१वीं सदी में भी प्रासंगिक एवं समयोचित प्रतित होते है। इसलिए वर्तमान परिप्रेक्ष में रहीम की रचनाएँ कालजयी सिद्ध होती है ।

---

१. रहीम रत्नावली , दोहवली पृ- 13

कवि रहीम के काव्य में प्रस्तुत विचार आज भी प्रासंगिक है –

संयुक्त परिवार के पक्षधर –

"आवत काज रहीम कहि बाढ़े बंधु-सनेह
जीरन होत न पेड़ ज्यों, यामें वरे बरेह।"२

अर्थात- जिस प्रकार बड़ा सा वृक्ष जमीन में गढ़ने वाली जड़ों से कमजोर नहीं होता, उसकी शक्ति बढ़ती जाती है, उसका बल बढ़ता है। पेड़ पर आनेवाली छोटी-छोटी टहनियों से बड़े-बड़े तूफानों को जड़ों के कारण ही थोपकर ऐसे झंझावात में अपने अस्तित्व को संरक्षित करता है। उसी प्रकार बड़ा परिवार भी अपने मुखिया के बल पर उत्पन्न होने वाली पारिवारिक आपत्तियों का मुकाबला आसानी से कर पता है।

कवि रहीम के ये विचार आज के बिखरते परिवारों के लिए एक सलाह ही है, जिससे आज के पारिवारिक संघर्षों को समाप्त किया जा सकता है।

शिष्टाचार के पक्षधर -

कवि रहीम स्वाभाव से ही मितभाषी, विनम्र और मर्यादावादी थे। उन्होंने अपने जीवन में शिष्टाचार को अधिक महत्त्व दिया है। उनके अनुसार मृदुभाषा या प्रेम की भाषा सबको जोड़ती है किन्तु कठोर एवं कटु शब्द महज जुड़ाव को तोड़ने का काम करते है। इसलिए हमेशा हमें विनम्र एवं मधुरता से बोलना चाहिए। कौआ और कोयल से ये बात समझाते है-

"दोनों रहिमन एक से जौ लो बोलत नाहि
जान परत है काक पिक रितु बसंत के माहि।"३

अर्थात- कौआ और कोयल का रूप रंग एक समान है दोनों में ज्यादा भेद भी नहीं है किन्तु कोयल ही सबको उसके आवाज के कारण प्रिय है और कौआ हमेशा आवाज से घृनीत होता है ।

कर्मपरायणता -

कवि रहीम कर्म को पुरुषार्थ की वरीयता मानते है । रहीम का समय राजा की कृपाधीनता का समय रहा । अर्थात राजा की कृपा से किसी कर्मशुन्य मनुष्य का भाग्य क्षणभर में पलट सकता था । रहीम ऐसे मनुष्य के जीवन को नकारते हुए

स्वयं के कर्तुत्व और कर्मण्यवृत्ति को अधिक महत्व देते है । उनकी नजर से पूर्वजो द्वारा अर्जित सम्पत्ति पर जिंदगी व्यतित करने वाले सधन व्यक्ति की अपेक्षा मेहनत - मजदूरी कर अपनी जिंदगी जीनेवाला मनुष्य श्रेष्ठ है ।

"यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय
बैर, प्रीत, अभ्यास, जस, होत-होत ही होय ।"३

अर्थात - मनुष्य जन्म से कुछ लेकर नहीं आता है । परिश्रम एवं अभ्यास से ही सबकुछ प्राप्त होता है,

---

२. रहीम रत्नावली , दोहवली पृ- ९/10
३. रहीम रत्नावाली- दोहावली पृ .७०

तो वही जीवन सफल कहलाता है ।

मर्यादावादी-

रहीम अपनी रचनाओं में समाज को मर्यादा का पालन करने का उपदेश देते हैं। उनके मतानुसार मनुष्य के जीवन में मर्यादों का होना अत्यावश्यक हैं, क्योंकि मर्यादा पालन से ही समाज का संतुलन स्थापित होता हैं । सफ़ेद बाल स्याह कर बुढ़ापे में भी शादी का ख्वाब देखनेवालों बारे में रहीम सींग काटकर बछड़ों में शामिल होने की स्थिति को आलोचना करते हैं –

"रहिमन थोर दिनन को कौन करे मुँह स्याह
नहीं क्षलन को परतिया, नहीं करन को ब्याह।"४

संयमशील एवं परिस्थिति अनुरूप ढलना -

कवि रहीम का मानना हैं कि, मनुष्य के जीवन में अनेक बाधाएं, आपत्तियाँ आती हैं। उनसे हमें बचाने में साहस, संयम परिस्थिति अनुरूप ढ़लने का स्वभाव ही हमें बचाता हैं । आपत्तियाँ साहस, धैर्य और ईमानदारी की कासोटियाँ होती हैं। जो समय के अनुसार झुकना नहीं जानते हमेशा चोट खाते हैं। किन्तु जो समझदार होते हैं, वे विपत्तियों से सीधे-सीधे टकराते नहीं बल्कि उनके आवेग के गुजर जाने का इंतजार करते हैं, क्योंकि समय के चलते सभी मुसीबतें हल होती नजर आती हैं।

"दुरदिन परे रहीम कहि, दुरथाल जैयत भागि
बढ़े हूजत घूर पर, जब घर लागत आगि।"५

मित्रता की पहचान

"कहि रहीम संपत्ति सगे बनत बहु रीत

विपत्ति कसौटी जे कैसे ते ही सांचे मीत।"६

अर्थात- संसार में सधन काल में सभी मित्र बन जाते है किन्तु निर्धनता की स्थिति में कोई पहचानता तक नहीं हैं। विपत्ति ही मित्रता की कसौटी है। जो विपत्ति काल का मित्र है वहीं सच्चा मित्र है। जहाँ अहं मौजूद है, जहाँ स्वार्थ मौजूद है, जहाँ कुटिलता है वहाँ मित्रता का अंत होना अटल है। इसलिए आदर्श मित्र वहीं है, जो अपने दु:ख में सहकर्मिता निभाए।

इस प्रकार कवि रहीम सम्पति संचय, श्रेष्ठ व्यक्तियो की संगत, अतिथि की संहिता, समय का सदुपयोग आदि सामाजिक मूल्यों पर संयुक्तिक भाष्य करते है।

---

४. रहीम रत्नावाली- वहीं- पृ. ७०.

५. वहीं- पृ.९८

संदर्भ ग्रंथ सूचि -

1. रहीम काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. मंजू शर्मा - साहित्य रत्नालय, कानपुर
2. हिंदी के प्रतिनिधि कवि - डॉ. विजय प्रकाश मिश्र - विद्या प्रकाशन, कानपुर
3. www.google.com
4. www.wikipedia.in